SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

अंक-4, खण्ड-3, अक्टूबर - दिसम्बर 2025 E-ISSN : 2584-2900

वर्तमान शिक्षा में मानवतावाद की प्रासंगिकता

राम प्रसाद रजक

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार

इस युग में ज्ञान तकनीकी और वैश्वीकरण बढ़ने से शिक्षा प्रणाली के सामने अनेक प्रकार की समस्याएं तथा संभावनाएं उपस्थित हो गई हैं। लोग पढ़ लिखकर विद्वान तो बन रहे हैं, किंतु उनमें मानवतावादी तथा नैतिक मूल्यों और सहयोगी भावनाओं की कमी पाई जा रही है। उनमें दूसरे की मदद करने उनका सहयोग उनके प्रति उदासीनता दिखाई देती है। प्रेम दया आदि की भावना समाप्त होती जा रही है। भारत में अनेक धर्मों जातियों संप्रदायों के लोग रहते हैं, किंतु उनमें आपसी सद्भाव की कमी पाई जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस समस्या का विचार किया जाएगा कि मानवतावादी सिद्धांत आज के परिप्रेक्ष्य में किस प्रकार उपयोगी हो सकता है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों में मानवतावाद को कैसे शामिल करना चाहिए कि लोगों में प्राकृतिक मनोभावनाएं वापस लौट आएं तथा मानव संवेदनशील बन जाए, तथा भारत पुनः एक संवेदनशील कल्याणकारी मानवतावादी देश बन जाए।

बीजशब्द

मानवतावाद, दार्शनिक, क्रांति, शिक्षा, दार्शनिक, स्वार्थ, मनोभावनाएं, संवेदनशील शोषण, चरित्र।

प्रस्तावना

आज के मानव में संवेदनाशीलता की कमी होती जा रही है। देश जहां डिजिटल क्रांति से गुजर रहा है, वहीं लोगों में मानवीय मूल्य, दया, करुणा, प्रेम, नैतिकता भाईचारा तथा वैश्विक मूल्य, ईमानदारी, वफादारी, सत्य आचरण व सेवा भाव की कमी हो गई है। ऐसे में शिक्षा का

उत्तरदायित्व सबसे अधिक हो गया है। अब शिक्षा का लक्ष्य नैतिक गुणों, सहयोग, प्रेम मानवीय मूल्य, सह अस्तित्व, करुणा, नैतिकता जैसे विश्वव्यापी गुणो का निर्माण करना होना चाहिए। मानवतावाद ऐसा ही श्रेष्ठ विचार है, जो मनुष्य को केंद्र में रखकर सोचता है मनुष्य की पूर्ण भलाई की बात करता है, शिक्षा में स्वतंत्रता, व्यक्तित्व विकास सृजनात्मक व पूर्ण न्याय देने वाले पाठयक्रम की बात कहता है। प्राचीन इतिहास इस बात के अच्छे गवाह है, कि जब मनुष्य के जीवन में परलोक की भावना से थी, तब वह सदैव अच्छे आचरण करता था, कभी किसी बलात् परेशान नहीं करता था, तथा कभी किसी का शोषण नहीं करता था। मानवतावादी सिद्धांत कुछ ऐसी ही भावना है, जो मनुष्य में पुनः प्राचीन काल जैसे अच्छे गुणो का विकास करेगा। सोशल मीडिया ने जो लोगों के मन में गलत भावनाएं पैदा की है, उनको दूर करेगा, कार्य की अधिकता से आज मानव में जितना तनाव हो गया है, वह तनाव मानवतावादी शिक्षा के द्वारा दूर होगा। मानवतावाद बाल केंद्रित शिक्षा देकर बालकों में ज्ञान तथा स्वविकास की वृद्धि करेगा। उसकी सोच को सृजनात्मक तथा पॉजिटिव बनाएगा।

शोध विधि

इसमें मैंने अपने स्वाध्याय- द्वारा अपने अनुभव का प्रयोग करते हुए तथा पुस्तकों की अध्ययन एवं ज्ञान तथा मनन करके मानवतावादी चिंतन को प्रस्तुत किया गया है, विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं प्राध्यापकों तथा ज्ञानियों से ज्ञान संग्रह करके इसमें शामिल किया गया है। शोध पत्र को लिखने में वर्णनात्मक तथा विवेचन शैली का प्रयोग किया गया है। तथा मानवतावाद जैसी कल्याणकारी भावना को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है। यह शोध कार्य अति महत्वपूर्ण कार्य है, इसको पढ़कर लोगों के मन में राम राज्य की भावना पुनः आएगी। लूटपाट, चोरी भ्रष्टाचार, अहिंसा, आदि कम होगी।

शोध विस्तार

मानवतावाद भावना है, जिसके द्वारा मनुष्य को सर्वोपरि माना गया है, तथा मानव को आधार मानकर मानव की हित एवं भलाई के लिए सारे कार्यों को करने की सलाह देता हैं। मानवतावाद

दो शब्दों से मिलकर बना है मानवता+ वाद " मानव शब्द में ता प्रत्यय लगने से मानवता बना है, जिसका अर्थ है, मानव -मानव की श्रेष्ठ भावना, उपयोगी गुण दया, सहिष्णुता, प्रेम, भाईचारा, संवेदना, सहयोग इत्यादि। वाद शब्द का अर्थ एक विचारधारा से लिया जाता है। इस प्रकार मानवता वह भावना है जो आदमी के लिए श्रेष्ठ नैतिक गुण दया सहिष्णुता प्रेम भाईचारा इत्यादि को फिर से फैलने की बात करता है, तथा क्रोध, घृणा, अशांति, अहिंसा, असहयोग जैसी बुरी भावनाओं को छोड़ने को कहती है। बात करता है। यह मानव के हित तथा उसकी स्वतंत्रता एवं विकास का समर्थन करता है। इस प्रकार मानवीय श्रेष्ठ मानवीय मूल्य को मानवतावाद कहा जाता है। मनुष्य का जीवन बहुत मुश्किल से मिलता है इसलिए उसके सारे कार्य मनुष्य को केंद्र में रखकर किए जाने चाहिए। मानव से आशा की जाती है कि वह दूसरों का सम्मान करें, तथा स्वयं भी समान लाभ की सिद्धांत पर कार्य करें। यदि हम मानवतावाद के उद्भव पर विचार करें तो यह देखते हैं कि 16वीं 17वीं शताब्दी में जब मनुष्य औद्योगिक क्रांति के कारण धन के पीछे पागल हो गया था, चारों तरफ भीड़ ही भीड़ दिखाई देते थी। मानव के पास किसी के लिए समय नहीं था, साधारण व्यक्ति की कोई गिनती नहीं थी, तब सर्वप्रथम ब्रयूवेकर ने अपनी पुस्तक 'मानवतावादी धार्मिक शिक्षा' में सर्वप्रथम मानवतावादी सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। जिसमें मानव को मानव बनी रहने की प्रेरणा दी गई थी। तथा लोगों को एक दूसरे के हित में कार्य करने के लिए कहा गया था। भारतीय विचारको जैसे डॉक्टर राधाकृष्णन, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, रविंद्र नाथ टैगोर, महर्षि दयानंद, महात्मा गांधी, विनोबा भावे, अरविंदो, श्री राम शर्मा आचार्य, आदि ने मानवतावादी सिद्धांत का समर्थन किया तथा मानव धर्म एवं अखंडता पुनर्जीवित करने हेतु अपना योगदान दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मनुष्य की आत्मा परमात्मा का अंश है इसलिए हमें उसकी भलाई के लिए सदैव काम करना चाहिए तभी सच्चा भजन होगा।

मानवतावाद के प्रमुख सिद्धांत

1. मानव इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, इसलिए उसकी सेवा सभी को करनी चाहिए।
2. प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का निवास होता है' इसलिए हमें उसकी सहायता और मदद करनी चाहिए, उसको किसी प्रकार की हिंसा पहुंचने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

3. हर मानव की विशेषताओं का ध्यान देते हुए उसकी व्यक्तिनिष्ठता को निखारने का प्रयास करना चाहिए।
4. मनुष्य पूर्ण सचेतन प्राणी है, इसलिए उसे स्वतंत्रता का जीवन मिलना चाहिए।
5. मनुष्य की सृजनात्मकता तथा शक्ति पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए तथा इसे प्रोत्साहित करना चाहिए।
6. अनुभव आधारित ज्ञान सर्वश्रेष्ठ तथा उपयोगी होते हैं, इसलिए मनुष्य को अनुभव प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।
7. शिक्षा में नैतिक तथा धार्मिक पाठ्यक्रमों को सम्मिलित किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में श्रेष्ठ गुणो का विकास हो सके।
8. आज का बालक कलाकार देश का जिम्मेदार व्यक्ति बनेगा अत: उनकी पढ़ाई लिखाई में मानवतावादी, सिद्धांतों को शामिल करना चाहिए।
9. शिक्षा का उद्देश्य बालकों को आगामी जीवन हेतु अच्छी तरह करना होना चाहिए न कि गड़े मुर्दे उखाड़ना।
10. मानव को समानतावादी बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए, तथा संस्कृति, पर्यावरण और प्रत्येक जीव जंतु की रक्षा का प्रयास करना चाहिए।

आज की शिक्षा के लिए मानवतावादी शिक्षा की उपयोगिता

आज की शिक्षा बस्ते की बोझ वाली शिक्षा हो गई है, अतः इसमें गुणात्मक सुधार लाने की आवश्यकता है, पाठ्यक्रम में वही पुरानी घिसीपिटी मुख्य वस्तुओं को पाठ्यक्रम में रखा गया है जो अंग्रेजों के शासन के समय की हैं। अस्तु इन्हे बदलकर नई अच्छे गुणो का विकास करने वाली शिक्षा पद्धति का विकास किया जाना चाहिए। नई शिक्षा नीति 2020 में शुरू की गई शिक्षा इस बात नैतिक, बहुविषयक तथा समावेशन पर आधारित हो। संरचना एवं जीवन कौशल का विकास करने वाली हो, यह सीधे मानवतावाद से जुड़े हुए सिद्धांतों का अध्ययन कराए तथा बालकों को सिखाएं। विद्यालयों में मूल्य आधारित शिक्षा दी जाए, समय-समय पर मनोवैज्ञानिक परामर्श लिए जाएं। शिक्षकों का प्रशिक्षण मानवतावादी सिद्धांतों के अनुसार करवाया जाए।

आज के मशीनी युग में जब मानव मानव को अच्छे से देखा तक नहीं रहा है, पहचान की बात दूर ही रही, इस मशीनी तकनीकी युग में माना था बात की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है, जैसा मानवतावाद में मनुष्य की गरिमा,नैतिकता, आजादी, सुख एवं विकास की योजनाएं बनाई जाती थी, तथा उसके कल्याण के लिए कार्य किया जाता था, उसकी आज बहुत अधिक आवश्यकता है। मानवतावादी विचार समाज में संतुलन स्थापित करने का कार्य करेगा, आज जब देशों में परमाणु युद्ध का खतरा बना हुआ है तब मानवतावाद विश्व शांति की स्थापना करेगा। ईमानदारी और सहिष्णुता कर्मचारियों को ठीक तरह से कार्य करने के लिए प्रेरित करेगी, आज जब जैव प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया आदि का प्रयोग दिन रात बढ़ रहा है, लोग स्वार्थी और मशीनी होते जा रहे हैं। आतंकवाद का विस्तार हो रहा है, बाल मजदूरी एवं लैंगिक अनाचार बढ़ रहे हैं, ऐसी दशा में मानवतावाद के सिद्धांत न्याय, करुणा, समान अधिकार इत्यादि समाज के लिए अति उपयोगी सिद्ध होंगे। इसी प्रकार आजकल जहां शिक्षा में निजीकरण बढ़ रहा है, अलोकतांत्रिक विचार बढ़ रहे हैं, अनेक प्रकार की अनैतिक तरीकों का प्रयोग किया जाता है, वहां मानवतावाद की सर्वजन प्रिय लोकतंत्र तथा "वसुधैव कुटुंबकम" विचार कि भावना लोगों को जागृत करेगी तथा उनको स्वार्थी होने से रोकेगी।

आज की व्यस्त मशीनी जीवन शैली ने एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से दूर कर दिया है, उसको स्वार्थी और एकाकी बना दिया है पर्यावरण के प्रति उदासीन बना दिया है, ऐसी स्थिति में मानवतावाद के गुण सह योग, सहचर्य, भाईचारा और प्रेम की भावनाएं, लोगों को जोड़ने का कार्य करेंगे, उन्हें प्रकृति प्रेमी बनाएंगे। इस प्रकार मानवतावाद केवल एक भावना न होकर समाज की महत्वपूर्ण जरूरत बन गया है। भारत के नीति निर्देशक तत्वों में मानवतावाद शामिल होना चाहिए। मानवतावाद सभी को सुखी एवं प्रसन्न करने की क्षमता रखता है।

निष्कर्ष

मनुष्य ईश्वर का अंश तथा उसका पुत्र है इसलिए उसका कल्याण सर्वोपरि होना चाहिए। प्राचीन काल में जब भारत सोने की चिड़िया कहलाता था, उसमें अच्छे संस्कार और गुण लोगों में पाए जाते थे, उसका विकास तेजी से हो रहा था, तथा लोगों की आयु 100 वर्ष से भी अधिक हुआ

करती थी। उन सभी सिद्धांतों और भावनाओं को पुनर्जीवन करने की माहिती आवश्यकता है, इसी का नाम मानवता वाद है। इसलिए वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य एक कुशल मानव तैयार करना हो जिससे वह भारत की वर्तमान समस्याओं को हल कर सके। उसमें श्रेष्ठ नैतिक गुण तथा सृजनशील मनुष्यता की भावना हो, एवं ''वसुधैव कुटुंबकम'' की भावना हो, इसीलिए मानवतावाद आज की युग में बहुत अधिक प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है कि औद्योगिक योग के कारण भ्रष्टाचारियों का जो प्रादुर्भाव हुआ है उसका अंत हो जाए तथा नए युग का सूत्रपात हो जो कल्याणकारी और रामराज्य हो, जिसमें सभी एक दूसरे की चिंता करें तथा प्रेम से पूर्ण सहयोग के साथ जीवन व्यतीत करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा डॉ बृजभूषण "मानवतावाद तथा मानव "(1968) राखी प्रकाशन आगरा उत्तर प्रदेश पेज नंबर 14 व 15
2. यदुवंशी "मानवतावाद और शिक्षा पूर्ब और पश्चिम के देशों में "(1963) प्रकाशक - ओरिएंट लोगमेंस मुंबई 24 /1कैनन हाउस पेज नंबर 124 व 125.
3. पांडे डॉ राम सकल "उदी यमान भारतीय समाज में शिक्षक", प्रकाशक राखी आगरा उत्तर प्रदेश. पेज नंबर 213 से 216.
4. डॉ धर्मेंद्र "शिक्षा के दार्शनिक पक्ष "(1996) अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा पेज नंबर 118 119.
5. डॉक्टर मधुरिमा सिंह- "शैक्षिक दर्शन एवं विचारक" (2012)भार्गव प्रकाशन आगरा,पेज नंबर 225, 226 और 227